पंचग्रन्थ

अध्याय
नौ

कुलपति याकूब

THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2014 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., 316 लाईव ओक रोड़., कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1973, 1978, 1984, 2011 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। जानडरवॉन बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 192 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय.....1

II. सरंचना एवं विषय-वस्तु.....1

क. संघर्ष का आरम्भ 4

ख. संघर्ष का अन्त 5

ग. इसहाक और पलिश्ती 6

घ. याकूब और कनानी लोग 6

ङ. शत्रुतापूर्ण विभाजन 7

च. शान्तिपूर्ण विभाजन 7

छ. लाबान के साथ 8

III. मुख्य विषय.....9

क. इस्राएल के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह 10

1. मूल अर्थ 10
2. आधुनिक उपयोग 12

ख. इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा 13

1. मूल अर्थ 13
2. आधुनिक उपयोग 15

ग. इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीष 16

1. मूल अर्थ 16
2. आधुनिक उपयोग 17

घ. इस्राएल के द्वारा परमेश्वर की आशीष 18

1. मूल अर्थ 18
2. आधुनिक उपयोग 20

IV. सारांश.....20

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पंचग्रन्थ

अध्याय नौ

कुलपति याकूब

परिचय

क्या आप ऐसे लोगों को जानते हैं जो छल से भरे हुए हैं इसलिए उनसे कोई आशा नहीं की जा सकती है? हो सकता है कि उनका धोखा और बेईमानी उन्हें – कम से कम थोड़े समय के लिए – सहायता पहुँचा सकती हो परन्तु यह अकसर उन्हें बदत्तर बना सकती है। परन्तु हर्ष की बात यह है, कि जब परमेश्वर ऐसे लोगों को विशेष तरीकों में उपयोग करना चाहता है, तो वे उसकी पहुँच से परे नहीं होते हैं। परमेश्वर उनको नम्र बनाने के लिए उनके जीवनों में कठिनाइयाँ लाएगा और उन्हें ऐसे लोगों के आकार में ढाल देगा जो उसकी सेवा करने के लिए तैयार रहें। और कम नहीं अपितु अधिकत्तर समयों में, वे जिन तक परमेश्वर ऐसे तरीकों से पहुँचता है, वे नम्रता और विश्वास में अन्यों के लिए आदर्श अर्थात् नमूने बन जाते हैं।

यह अध्याय पंचग्रन्थ के उस भाग के लिए समर्पित है जो बाइबल के एक सबसे ज्यादा धोखे देने वाले व्यक्ति, "कुलपति याकूब", के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है। परन्तु, जैसा कि हम देखेंगे, उत्पत्ति का यह भाग 25:19-37:1 से लेकर, न केवल यह प्रकट करता है कि कैसे याकूब धोखा देने वाला था, अपितु यह भी कैसे परमेश्वर ने उसे नम्र बनाया और उसे इस्राएल के एक सबसे ज्यादा प्रशंसा किए जाने वाले कुलपति के रूप में ढाल दिया।

अन्य अध्यायों में, हमने देखा कि उत्पत्ति की पुस्तक को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया गया है। पुस्तक का पहला भाग आदिकालीन इतिहास 1:1-11:9 में पाया जाता है। यहाँ मूसा व्याख्या कर रहा है कि कैसे इस्राएल की बुलाहट प्रतिज्ञात् भूमि की उन बातों में निहित है, जो संसार के इतिहास के आरम्भ की अवस्था में घटित हुई। दूसरा भाग 11:10-72:1 आरम्भिक कुलपतियकालीन इतिहास का विवरण देता है। इस भाग में, मूसा स्पष्ट करता है कि कैसे प्रतिज्ञात् भूमि की ओर की जाने वाली यात्रा को अब्राहम, इसहाक और याकूब के जीवनों की पृष्ठभूमियों के साथ देखा जाना चाहिए। तीसरा 37:2-50:26 में कुलपतियकालीन इतिहास का उत्तरोत्तर भाग पाया जाता है। इन वचनों में, मूसा ने यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी को विषयों को सम्बोधित करने के लिए बताया है जो इस्राएल के गोत्रों में उठ खड़े हुए हैं जब वे प्रतिज्ञात् भूमि की ओर आगे बढ़ रहे थे।

कुलपति याकूब का विवरण दूसरे भाग का अंश है; आरम्भिक कुलपतियकालीन इतिहास इस्राएल के तीन जाने-पहचाने कुलपतियों: अब्राहम, इसहाक और याकूब का विवरण देता है। इसहाक के जीवन की घटनाएँ अब्राहम के 11:10-25:18 में दिए हुए विवरण, और याकूब के 25:19-37:1 में दिए हुए विवरण के साथ बुनी हुई हैं। इसलिए, इस अध्याय में, हम हमारे ध्यान को इस भाग के पहले आधे हिस्से में: याकूब के जीवन के ऊपर केन्द्रित करेंगे।

कुलपति याकूब के ऊपर हमारा यह अध्याय दो मुख्य भागों में विभाजित होगा। पहला, हम उत्पत्ति के इस भाग की संरचना और विषय-वस्तु की जाँच करेंगे। तब हम मुख्य विषयों को देखेंगे जिनके लिए मूसा ने अपने मूल पाठकों को जोर दिया, और यह कि कैसे यह विषय आधुनिक मसीहियों के ऊपर लागू हो सकते हैं। आइए याकूब की कहानी की संरचना और विषय-वस्तु के साथ आरम्भ करें।

सरंचना एवं विषय-वस्तु

बाइबल के अधिकांश विद्यार्थी याकूब के जीवन की घटनाओं से पहचान रखते हैं। परन्तु हमारे इस अध्याय के इस स्थान पर, हम यह देखना चाहते हैं कि कैसे मूसा ने उत्पत्ति की पुस्तक में इन घटनाओं के विवरण को संगठित किया है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, कि जब हम पवित्रशास्त्र का पठन् करते हैं, हमें दोनों बातों को पूछना चाहिए कि वे क्या कहते हैं और वे *कैसे* इसे कहते हैं। दूसरे शब्दों में, कैसे प्रत्येक संदर्भ की विषय-वस्तु और

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

संरचना इक्ट्ठे मिल कर कार्य करती हैं। इस सम्बन्ध की समझ बाइबल के लेखकों के उनके मूल पाठकों के लिए लक्षित उद्देश्यों को समझने में सहायता करती है। और साथ ही यह हमारी सहायता करती है कैसे हमें उनके मूलपाठ को हमारे आधुनिक संसार में लागू करना चाहिए।

पवित्रशास्त्र के एक अंश जैसे उत्पत्ति 25:19-37:1 की तरह लम्बे और जटिल की रूपरेखा का निर्माण करने के लिए बहुत से तरीके हैं। परन्तु, हमारे प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए, हम याकूब के जीवन के विवरण को सात मुख्य खण्डों में पहचान करेंगे।

- पहला खण्ड यह है जिसे हम उत्पत्ति 25:19-34 में संघर्ष का आरम्भ कह कर पुकार सकते हैं। यह याकूब और एसाव के मध्य में एक नाटकीय समस्या को उत्पन्न करती है, और परिणामस्वरूप उन जातियों में जो उनसे उत्पन्न हुई। यह संघर्ष याकूब के पूरे जीवन के विवरण में उतार और चढ़ाव की तीव्रता को उत्पन्न करता है। इस पहले विभाजन का अन्त का चिन्ह याकूब और एसाव से उसके पिता, इसहाक की ओर, एक नायक के रूप में ध्यान लगा कर परिवर्तन करके किया गया है।
- दूसरा खण्ड इसहाक और पलश्तियों के मध्य 26:1-33 में शान्तिपूर्ण मुठभेड़ों की ओर मुड़ता है। यह विभाजन एसाव और याकूब की ओर मुख्य पात्रों की ओर मुड़ते हुए अन्त होता है।
- तीसरा खण्ड याकूब और एसाव के शत्रुता भरे हुए सम्बन्ध-विच्छेद का 26:34-28:22 में विवरण है। इस खण्ड का अन्त याकूब का प्रतिज्ञात् भूमि से बाहर की ओर लाबान और उसके सम्बन्धियों की ओर जाने के साथ अन्त होता है।
- चौथा खण्ड याकूब का लाबान के साथ व्यतीत किए हुए समय 29:1-31:55 में करता है। यह खण्ड याकूब के प्रतिज्ञात् भूमि की ओर लौट आने के साथ अन्त होता है।
- पाँचवाँ खण्ड याकूब के द्वारा 32:1-33:17 में प्रतिज्ञात् भूमि में पुन: वापस के पश्चात् याकूब और एसाव के द्वारा शान्तिपूर्ण अलगाव का उल्लेख करता है। यह खण्ड तब एसाव से याकूब की ओर जो कनानी विरोधियों का साथ व्यवहार कर रहा मुड़ जाता है।
- छठा खण्ड याकूब और कनानियों के मध्य 33:18-35:15 में हुई मुठभेड़ों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है। इस खण्ड के अन्त में, ध्यान याकूब की वंशावली की ओर मुड़ते हुए केन्द्रित हो जाता है।
- अन्त में, सातवाँ खण्ड याकूब के जीवन के बारे में उसके भाइयों के साथ 35:16-37:1 में संघर्ष के अन्त के बारे में बात करता है।

टिप्पणीकारों की एक बड़ी सँख्या ने यह ध्यान दिया है कि याकूब के जीवन के ऊपर यह मूलभूत रूपरेखा एक बड़े पैमाने पर व्यतिक्रम को निर्मित करती है अर्थात्:

> **एक ऐसी साहित्यिक संरचना जिसमें खण्ड एक मुख्य बात के पहले या पश्चात् आपस में एक दूसरे के प्रति समान्तर या सन्तुलन में रहते हैं। जब कभी भी आप एक खण्ड या पुराने नियम के एक हिस्से के बारे में बात करते हैं तो आपको ध्यान में रखना चाहिए, कि एक दुर्लभ अपवाद के साथ, बाइबल के लेखकों ने अपनी कहानियों, या अपनी कविताओं को और इसी तरह की अन्य बातों को, एक रूपरेखा को ध्यान में रखते हुए नहीं लिखा। जैसा कि मानो, "अब मैं भाग एक के ऊपर हूँ। अब मैं भाग दो के ऊपर हूँ। अब मैं भाग तीन के ऊपर हूँ।" इसकी अपेक्षा, जो कुछ हम यहाँ बात कर रहे हैं वह व्याख्याकारों के द्वारा मूलपाठ को देखा जाना है जो कि लिखे गए थे और प्राप्त किए जाने वाली पद्धतियाँ ऐसी हैं जिन्हें पहचाना जा सकता है, जिसका अर्थ है कि प्रत्येक रूपरेखा निश्चित मापदण्डों को संरचना और तार्किक सम्बन्धों का विश्लेषण करने के लिए उपयोग कर रही है। और इस बात के ऊपर निर्भर करते हुए कि कौन सा मानदण्ड आपके पास हैं जिन्हें आप उपयोग करते हैं, आप भिन्न तरह की रूपरेखाओं को ले आएँगे। ठीक है, मापदण्डों में से एक पहले के खण्डों और बाद के खण्डों के मध्य में जिन्हें आप उपयोग कर सकते हैं**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

सन्तुलन, या प्रतिध्वनि, या प्रतिबिम्ब, या समान्तरों का है...परन्तु जब आप और भी अधिक विस्तारवर्धक समान्तरों को पाते हैं...ऐसा कहना कि याकूब की घटना में पहले खण्ड और अन्तिम खण्ड के मध्य में – तो आप ऐसे स्थान पर आ खड़े होते हैं, जहाँ आपके पास यदि पर्याप्त मात्रा में समान्तर हैं, तो इसे आप वास्तव में एक "जानबूझकर किए जाने वाले व्यतिक्रम" के रूप में पुकार सकते हैं, जहाँ पर लेखक इन शब्दों में सोच रहा है कि "मैंने यह किया। मैंने यह किया। मैंने इसे पहले भाग में किया; अब मैं इन बातों को करने जा रहा हूँ जिनके पहले के भाग के साथ कच्चे सहसम्बन्ध हैं"...और इन सहसम्बन्धों के कारण जो कि इस तरह के संरचना को लेकर आए हैं, आपके पास तब सहसम्बन्धी खण्डों की तुलना और इसमें विरोधाभासों की पहचान करने का अवसर है। और यही बात मूल्य रखती है जब बात याकूब की कहानी की आती है। याकूब के जीवन के आरम्भिक भागों का याकूब के जीवन के उत्तरोत्तर भागों के साथ सहसम्बन्ध का होना। और जब आप इन सहसम्बन्धों को देखते हैं – जो विरोधाभासों और तुलनाओं को सम्मिलित करते हैं – जब आप इन दोनों को इक्ट्ठा देखते हैं और वे इन विभिन्न खण्डों के मध्य में उठ खड़े होते हैं, तब आपके पास यह देखने का अवसर है कि मूसा लेखक होने के नाते दोनों खण्डों के ऊपर जोर दे रहा है। विरोधाभास और तुलनाएँ, एक व्यतिक्रम की विशेषता को समझने के लिए कुँजी है।

- डॉ. रिचर्ड एल. प्रॉट, जूनीयर

जैसा कि हमने अभी अभी ध्यान दिया, कि याकूब की कहानी का पहला भाग याकूब और एसाव भाइयों के मध्य में संघर्ष के आरम्भ का विवरण देता है। यह खण्ड सातवें और अन्तिम खण्ड के साथ सन्तुलित किया गया है जहाँ हम उनके संघर्ष के अन्त के बारे में पढ़ते हैं। दोनों खण्ड न केवल भाइयों के मध्य में संघर्ष का निष्पादन करते हैं, अपितु उन जातियों का भी जो उनमें से निकल आई हैं।

दूसरा खण्ड इसहाक और उसका पलिश्तियों के साथ आपसी सम्बन्ध के ऊपर केन्द्रित है। यह छठे खण्ड के मिलता जुलता है जहाँ पर हम याकूब और उसका कनानियों के साथ आपसी सम्बन्ध को देखते हैं। ये खण्ड एक दूसरे को सन्तुलित करते हैं क्योंकि यह दोनों उन मुठभेड़ों का विवरण देते हैं जो कि प्रतिज्ञात् भूमि में कुलपतियों और अन्य समूहों में घटित हुई। तीसरा खण्ड याकूब और एसाव के शत्रुतापूर्ण सम्बन्ध विच्छेदन की विवरण देता है। यह पांचवें खण्ड के साथ सन्तुलित होता है जहाँ पर याकूब और एसाब का शान्तिपूर्ण अलगाव का विवरण मिलता है। स्पष्ट है, कि दोनों खण्ड उन समयों की गतिशीलताओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं जब भाई एक दूसरे से अलग हो गए। और अन्त में, चौथा खण्ड याकूब का लाबान के साथ व्यतीत किए हुए समय को देखता है। यह खण्ड अकेला व्यतिक्रमिक संरचना के केन्द्र, चूल पर खड़ा हुआ है। इसी कारण से, यह याकूब की कहानी के नाटक में एक परिवर्तन के बिन्दु को निर्मित करता है।

इन व्यापक सममितीय रूपरेखा को ध्यान में रखते हुए, आइए हम मूसा के विवरण को प्रत्येक जोड़े वाले खण्ड की तुलना और इसके विरोधाभासों की विषय-वस्तु के द्वारा जाँच करें। सुविधा के लिए, हम दो सबसे अधिक बाहर खण्डों से आरम्भ करेंगे और कार्य करते हुए केन्द्रीय खण्ड की ओर चले जाएंगे। आइए हम उत्पत्ति 25:19-34 में भाइयों के संघर्ष से आरम्भ करें।

संघर्ष का आरम्भ (उत्पत्ति 25:19-34)

यह खण्ड तीन सरल धारावाहिकों से मिलकर बना हुआ है जो भाइयों के मध्य में कैसे संघर्ष का आरम्भ हुआ, को दिखाते हैं। पहला धारावाहिक दो जुड़वा भाइयों के जन्म से पहले, 25:19-23 में घटित हुआ है। यह वर्णित करता है कि जुड़वा भाइयों ने माता के गर्भ में झगड़ा किया। सुनिए उत्पत्ति 25:23 को, जहाँ पर परमेश्वर जन्म के पूर्व के इस संघर्ष को रिबका को विवरण देता है:

तेरे गर्भ में दो जातियाँ हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे, और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा (उत्पत्ति 25:23)।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जैसा कि हम देखते हैं, परमेश्वर ने कहा कि याकूब और एसाव के मध्य में संघर्ष भाइयों के मध्य में होने वाले व्यक्तिगत् संघर्ष से बहुत अधिक बढ़कर था। इसने "दो जातियों" या "दो राज्य" के लोगों के मध्य में संघर्ष का पूर्वानुमान लगाया। इस तरह से, कौन सी दो जातियाँ परमेश्वर के मन में थी? हमें इस भाग के दूसरे और तीसरे धारावाहिक में इसके उत्तर को पाते हैं।

दूसरा वृतांत हमें भाइयों के जन्म लेने के समय के संघर्ष को 25:24-26 में बताता है। यह छोटा संदर्भ हमें पहले उल्लेख की हुई दो जातियों के पहली पहचान को देता है। उत्पत्ति 5:25 पहले जन्में बच्चे एसाव का विवरण देती है जो कि जन्म के समय "लाल" रंग का था। इब्रानी शब्द אַדְמוֹנִי *(एदमोनी)* का अनुवाद लाल के लिए हुआ है। यह शब्दावली शब्दों के चतुराई से उपयोग किए जाने को प्रस्तुत करती है, क्योंकि यह इब्रानी भाषा के शब्दों के उसी परिवार से निकल आती है जहाँ पर शब्द אֱדוֹם या *एदोम* का उपयोग किया गया है। यह सूचित करता है कि एसाव एदोम की जाति का पूर्वज था। हम उत्पति 25:26 में दूसरी जाति के बारे में सीखते हैं, जहाँ पर दूसरा पुत्र को याकूब कह कर पुकारा गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि याकूब, इस्राएल जाति का जाना-पहचाना पिता था।

तीसरा वृतांत 25:27-34 में जवान युवकों याकूब और एसाव के मध्य में प्रतिद्वन्द्व का विवरण देती है। इन वचनों में, याकूब ने एसाव को अपने पहिलौठेपन का अधिकार मसूर की "लाल दाल" या इब्रानी में אֱדֹם *(एदोम)* से परिवर्तित कर लिए जाने के लिए प्रलोभन दिया। इस इब्रानी शब्द ने पहले ही एसाव के जन्म के समय उसके "लाल" रंग के होने की प्रतिध्वनि सुनाई थी। और उत्पति 25:30 स्पष्टता से ध्यान देती है कि इस लिए ही एसाव को "एदोम" कह कर भी पुकारा जाता था।

जैसा कि हमने अभी अभी देखा, आरम्भ से ही मूसा ने उसके विवरण की ओर महत्वपूर्ण दिशा निर्देशों को उसके पाठकों के लिए उपलब्ध कर दिया। उसके पाठक सीखने वाले थे कि याकूब और उसके भाई एसाव के मध्य में क्या कुछ घटित हुआ था। परन्तु दो भाइयों में संघर्ष केवल भाइयों में संघर्ष से बहुत अधिक बढ़कर था। यह दो भाई दो जातियों, इस्राएल और एदोम के प्रधान थे, और इसलिए, उनका व्यक्तिगत् संघर्ष उस संघर्ष की प्रतिछाया बन गया जो कि इन दो जातियों में उनके वंशजों के मध्य में चला।

> **जब हम इस्राएल और एदोम के मध्य में कूटनीतिक सम्बन्धों, राजनीतिक चौराहों, मिलान बिन्दुओं के बारे में सोचते हैं...तो यह एक ऐसा सम्बन्ध मिलता है जो कि खुशहाली से भरा हुआ नहीं है...यहाँ तक कि जब वे अपनी माता रिबका के गर्भ में हैं, ठीक है न? वे लड़ रहे हैं और तब उनमें से एक धोखे के साथ दूसरे का स्थान ले लेना चाहता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है, एसाव पहले बाहर निकल आता है; इसलिए वही पहिलौठा हुआ। परन्तु याकूब ठीक उसके पीछे निकल आता है और वह धोखे से उसके स्थान को ले लेना चाहता है, जो कि उसका नाम है। याकूब एक "धोखा देना वाला है," ठीक है न? " वह व्यक्ति जो धोखा देता है।" और इस तरह से, यह पृष्ठभूमि है। और तब, बहुत ही युवा – दो बहुत ही भिन्न स्वभाव के – याकूब तम्बू में वास करना चाहता है और भोजन करना और घर में रहना चाहता है और एसाव एक शिकारी है, ठीक है न? परन्तु याकूब वह चाहता है जो कि एसाव के पास है, जो कि पहिलौठेपन का विरासत में पाया हुआ अधिकार है। इसलिए वह उसके लिए भोजन बनाता है। वह शिकार खेल कर बहुत ही भूखा घर वापस आता और वह अपने भाई के साथ इस बेवकूफी से भरे हुए कारोबार को करता है। और याकूब यूसुफ से कहता है, "क्या तुम जानते है? मैं तुम्हारे लिए एक स्वादिष्ट भोजन बनाने वाला हूँ और तुम मुझे विरासत में मिले हुए पहिलौठेपन के अधिकार को दे देना।" वह लड़का जो बहुत ही भूखा था, उससे कहता है कि, "ठीक है, मैं दे दूँगा।" और तब वह जान जाता है कि क्या घटित हो गया था और तब वह अपने पिता से आशीष को चाहता है। और अब, अपनी स्वयं की माता की सहायता के साथ, याकूब एसाव होने का बहाना करता है। और एसाव, आप जानते हैं कि वह "लौह पुरुष" के जैसा – बालों से भरा**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

हुआ है? और इस कारण वह अपनी बाजुओं पर किसी तरह के बालों वाले चमड़े को पहनता है और एसाव होने का बहाना बनाते हुए अन्दर चला जाता है और परिवार के कुलपति से आशीष की माँग करता है। और इसहाक कहता है, "ठीक है, तुम आशीष ले सकते हो।" और इस तरह से, हर बात में एसाव के पहिलौठेपन के अधिकार को चुरा लिया गया है। और इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि इस तरह से, यह एक बदले वाले लहू को उत्पन्न करता है। और तब याकूब को घर छोड़ना पड़ता है अन्यथा उसका कत्ल उसका भाई के द्वारा हो जाएगा। इस तरह से उन दो भाइयों में अच्छा सम्बन्ध न रहा...और तब यह और अधिक बढ़ जाता है जब वे दो जातियाँ-राज्य बन जाते हैं; वे एक दूसरे से घृणा करते हैं। और उनके पास इसे प्रमाणित करने के लिए इतिहास है। - डॉ. टॉम पेटर

पहले खण्ड में याकूब, एसाव और उनके वंशजों का यह ध्यानाकर्षण सातवें और अन्तिम खण्ड में 25:16-37:1 में भाइयों के संघर्ष के अन्त को समझने में हमारी सहायता करता है।

संघर्ष का अन्त (उत्पति 25:16-37:1)

इस खण्ड में, मूसा एक बार फिर से अपने ध्यान को याकूब और एसाव और उनके द्वारा प्रतिनिधित्व करती हुई दो जातियों के ऊपर लगाता है। वह ऐसा तीन भागों में करता है। प्रथम, वह याकूब की वंशावली को उत्पति 35:16-26 में विवरण देता है। यह खण्ड विस्तार से बताता है कि कैसे याकूब के वंशजों ने इस्राएल की जाति को निर्मित किया था। इसमें बिन्यामीन और रूबेन के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी सम्मिलित है और इसका अन्त इस्राएल के बारह गोत्रों के कुलपतियों की सूची के साथ होता है।

दूसरा, मूसा उत्पत्ति 25:27-29 में इसहाक की मृत्यु के समय याकूब और एसाव के व्यवहार का वर्णन करता है। यह संक्षिप्त संदर्भ उल्लेख करता है कि दोनों अर्थात् एसाव और याकूब ने इसहाक को मिट्टी दी। इस विवरण की मार्मिकता स्पष्ट हो जाती है जब हम इसे उत्पत्ति 27:41 में स्मरण करते हैं कि एसाव याकूब को जैसे ही उसके पिता की मृत्यु होती है, तो तुरन्त मार देने की धमकी देता है। इस आलोक में, इसहाक की मृत्यु का विवरण इस ओर संकेत देता है कि दोनों भाइयों में संघर्ष समाप्त हो गया है।

तीसरा, मूसा ने उत्पति 36:1-43 में एसाव की वंशावली के बारे मे विस्तार से विवरण दिया है। यह विवरण दो वंशावलियों के विवरणों को इक्ट्ठा कर देता है जो कि एसाव की वंशावली के विभिन्न हिस्सों का विवरण देते हैं। यह खण्ड उन राजाओं के साथ समाप्त होता है जिन्होंने सेईर के क्षेत्र में राज्य किया। तब मूसा ने 37:1 को इसके पश्चात् यह विवरण देते हुए जोड़ दिया कि याकूब निरन्तर कनान की भूमि में वास करता है। इस तरह से एसाव की वंशावली को अन्त करते हुए, मूसा ने यह स्पष्ट कर दिया, कि यद्यपि याकूब और एसाव के मध्य में संघर्ष समाप्त हो गया, परन्तु दोनों भाई अलग अलग हो गए थे। याकूब के वंशज् कनान में रहे और एसाव के वंशज् एदोम में वास करते रहे।

याकूब के जीवन के पहले और अन्तिम खण्डों की विषय-वस्तु को ध्यान में रखते हुए, आइए हम एक कदम और मूसा के विवरण के केन्द्र की ओर, दूसरे और छठे खण्डों की ओर मुड़ते हैं जो प्रतिज्ञात् भूमि में कुलपतियों की मुठभेड़ों का निष्पादन करते हैं।

इसहाक और पलिश्ती (उत्पति 26:1-33)

ये खण्ड इसहाक और पलिश्तियों के मध्य में विरोधाभासी रूप में शान्तिपूर्ण मुठभेड़ों को, उत्पत्ति 26:1-33 में, याकूब और कनानियों में उत्पत्ति 33:18-35:15 में शत्रुतापूर्ण मुठभेड़ों का विवरण देती हैं। हम दूसरे खण्ड से आरम्भ करेंगे जो कि इसहाक और उसकी पलिश्तियों के साथ हुई मुठभेड़ का विवरण देती है।

अब, कई आलोचनात्मक व्याख्याकारों ने यह तर्क दिया है कि उत्पत्ति का यह अध्याय अपने स्थान से परे है। हम सभी देख सकते हैं कि इसका ध्यान याकूब की अपेक्षा इसहाक के ऊपर है। और यह बहुत अच्छी तरह से सत्य हो सकता है कि यह घटनाएँ याकूब और एसाव के जन्म से पहले घटित हुई हैं। परन्तु जैसा कि हम यहाँ पर देखते हैं, याकूब के जीवन के ऊपर मूसा का यह ध्यानाकर्षण अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यह सामग्री दो घनिष्ठता से सम्बन्धित वृतांतों में विभाजित है। पहला वृतांत पलिश्तियों के साथ 26:1-11 में इसहाक की आरम्भिक शान्ति स्थापना का विवरण देता है। इन वचनों में, इसहाक ने पलिश्तियों के राजा अबीमेलेक को धोखा, इस सोच के साथ दिया है कि रिबका उसकी बहिन थी। इसहाक के धोखे की जान लेने के पश्चात्, अबीमेलेक ने रिबका को इसहाक को वापस लौटा दिया। उसने तब इसहाक को अनुमति दी कि वह उसके क्षेत्र में रह सकता था और अपने लोगों को आदेश दिया कि वे उसे किसी भी तरह से नुक्सान न पहुँचाए।

दूसरा वृतांत उल्लेख करता है कि इसहाक पलिश्तियों के साथ 26:12-33 में शान्ति की स्थापना करता है। इस खण्ड में, परमेश्वर ने अब्राहम को आशीष दी परन्तु उसकी बहुत सी भेड़ों और झुंडों ने पलिश्तियों में उसके प्रति ईर्ष्या भर दी। यह वृतांत अबीमेलेक के द्वारा इसहाक को मिलने वाली परमेश्वर की आशीष को स्वीकार करने और बेर्शेबा में उन दोनों के मध्य सन्धि होने के साथ अन्त होता है।

इसहाक का पलिश्तियों के साथ शान्ति की स्थापना करने की यह कथा इस तथ्य के मुख्य अंश पर प्रकाश डालती है कि इसहाक, और उसके बदले में उसका पुत्र याकूब, अब्राहम के उत्तराधिकारी थे। जब हम इस खण्ड की विषय वस्तु को अब्राहम के जीवन के साथ करते हैं, तो हम अब्राहम के जीवन के साथ कई समान्तर बातों को पाते हैं। अब्राहम ने पलिश्तियों, के अबीमेलेक नाम के राजा के साथ, उत्पत्ति 20:1-18 में व्यवहार किया था। अब्राहम ने कुएँ खोदे और उत्पत्ति 21:30 और 34 में पलिश्तियों के मध्य में जीवन व्यतीत किया। अब्राहम ने साथ ही उत्पत्ति 21:22-34 मे बेर्शेबा में पलिश्तियों के साथ एक सन्धि बाँधी थी। मूसा ने अब्राहम के साथ इन तुलनाओं को सभी तरह के सन्देहों को दूर करने के लिए निर्मित किया जिन्हें परमेश्वर ने इसहाक के पलिश्तियों के साथ शान्तिपूर्ण सम्बन्ध में रहने के लिए अनुमति दी थी।

अब आइए इसहाक के पलिश्तियों के साथ किए हुए व्यवहार की ओर छठे खण्ड के याकूब के जीवन की ओर मुड़ें जो कि याकूब और कनानियों की मुठभेड़ के ऊपर 33:18-35:15 में ध्यान केन्द्रित करता है।

याकूब और कनानी लोग (33:18-35:15)

याकूब का कनानियों के साथ संघर्ष भी दो घनिष्ठ वृतान्तों से मिलकर बना हुआ है। पहला वृतान्त का सरोकार याकूब का 33:18-34:31 में शकेम नगर हुए संघर्ष के साथ है। जब याकूब कनानियों के साथ था, तो हमोर शकेम के पुत्र ने याकूब की पुत्री दीना को भ्रष्ट किया था। अपने बहिन के ऊपर हुए आक्रमण की प्रतिक्रिया में, याकूब के पुत्रों ने शकेम वासियों के साथ यह विश्वास दिलाते हुए चालाकी की कि सब कुछ क्षमा कर दिया जाएगा यदि वे सब खतना करा लेते हैं। परन्तु एक बार जब शकेम के निवासी खतने के कारण अयोग्यता में पड़े हुए थे, तो याकूब के पुत्र शिमोन और लेवी ने उनके ऊपर आक्रमण कर दिया और इन सभों को मार दिया। इसके पश्चात्, याकूब ने भय को व्यक्त किया कि कनानी इसका प्रतिशोध लेंगे और उसके परिवार को मार डालेंगे। यद्यपि याकूब के पुत्रों ने जोर दिया उन्होंने सही कार्य किया था, याकूब के शिमोन और लेवी को उत्पत्ति 49:5-7 में कहे हुए अन्तिम शब्द कुछ और ही संकेत देते हैं।

दूसरे वृतान्त में, याकूब उत्पत्ति 35:1-15 में बेतेल में परमेश्वर की ओर से नाटकीय रूप में आश्वासन को प्राप्त किया। 35:2-4 में, याकूब ने स्वयं और अपने पूरे परिवार बेतेल में एक परमेश्वर के लिए एक वेदी निर्मित करने के लिए पवित्र किया। परिणामस्वरूप, कनानियों के ऊपर परमेश्वर का भय आ पड़ा और उन्होंने याकूब का पीछा नहीं किया। तब, बेतेल में याकूब के द्वारा वेदी का निर्माण हो जाने के पश्चात्, परमेश्वर ने उससे बात की और उसे आश्वासन दिया कि वह उसके उत्तराधिकारियों का पिता होगा। हम इसे विशेष रूप से 35:1-12 में देखते हैं जहाँ पर परमेश्वर के शब्द उसके पहले इसहाक को 26:3-4 में कहे हुए शब्दों के समान्तर हैं। यह वृतान्त याकूब के द्वारा इस आशीष के लिए धन्यवाद देने के द्वारा समाप्त होता है।

और बहुत कुछ दूसरे खण्ड की तरह, हम बहुत से समान्तरों को अब्राहम और याकूब के जीवनों में इन अध्यायों में देखते हैं। उत्पत्ति 33:20 में, याकूब ने यहोवा के लिए शकेम में एक वेदी को बहुत कुछ समान्तर रूप में अब्राहम की तरह बनाया जैसी उसने उत्पत्ति 35:6-7 में उसके साथ पहले निर्मित की थी। इसके अतिरिक्त, 35:6-

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

7 में, याकूब शकेम से बेतेल की ओर चला आया और जैसे अब्राहम ने उत्पत्ति 12:8 में किया था वैसे ही एक वेदी का निर्माण किया। जैसा की दूसरे खण्ड में पाया जाता है, अब्राहम के जीवन के इन सकारात्मक सम्पर्कों ने यह दर्शाया कि परमेश्वर ने याकूब के कनानियों के साथ हुए संघर्ष की अनुमति दे दी थी।

अब आइए चौथे और पाँचवें खण्ड की ओर मुड़ें जो याकूब और एसाव के सम्बन्ध विच्छेदन के समय का निपटारा करता है। ये कथाएँ दो भिन्न समयों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करती हैं जब दो भाई आपस में अलग हो गए। तीसरा खण्ड याकूब और एसाव के 26:34-28:22 में शत्रुता से भरे हुए अलगाव का विवरण देता है। और पाँचवाँ खण्ड याकूब और एसाव के उत्पत्ति 32:1-33:17 में दिए हुए शान्तिपूर्ण अलगाव का वर्णन देता है। आइए याकूब और एसाव के शत्रुता से भरे हुए अलगाव के वर्णन को देखें।

शत्रुतापूर्ण विभाजन (26:34-28:22)

यह भाग चार विवरणों के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है जो कि वैकल्पिक रूप से एसाव और याकूब के मध्य में इन घटनाओं की नैतिक जटिलताओं को दर्शाते हैं। प्रथम, 26:34 एक संक्षिप्त विवरण देता है कि एसाव ने स्वयं को अपयश में अपने माता पिता की इच्छा के विरूद्ध हित्ती पत्नियों को लेने के द्वारा किया। दूसरा, 27:1-28:5 में, हम एक लम्बी कथा को पढ़ते हैं कि कैसे याकूब ने इसहाक से आशीष को धोखा देकर प्राप्त किया। इस जानी-पहचानी कहानी में, याकूब ने उस आशीष को अपने पिता इसहाक को धोखा देने के द्वारा प्राप्त किया जो कि एसाव के लिए रखी हुई थी। यह जानने के पश्चात् कि क्या कुछ घटित हुआ था, एसाव यहाँ तक गुस्से से भर गया कि रिबका को याकूब के जीवन का भय सताने लगा। उसने इसहाक को आश्वस्त किया कि वह याकूब को पद्दमराम में भेज दे जहाँ पर याकूब अपने लिए अपने सम्बन्धियों में से एक पत्नी को प्राप्त करे। तीसरा, एसाव को पाठकों की सहानुभूति के बहुत अधिक अहसासों से दूर रखने के लिए, मूसा ने 28:6-9 में उल्लेख किया है कि एसाव ने अपने माता पिता की आज्ञा की अवहेलना करते हुए इश्माएलियों में से पत्नियों को कर लिया। चौथा और अन्तिम भाग परमेश्वर की इसहाक के उत्तराधिकारी के रूप में याकूब के चुनाव को बेतेल में 28:10-12 में दिए हुए स्वप्न के द्वारा याकूब को दी हुई आशीष में दिए जाने की पुष्टि करता है।

शान्तिपूर्ण विभाजन (उत्पत्ति 23:1-33:17)

याकूब और एसाव के विभाजन की तीसरे खण्ड में दी हुई कथा के विरोधाभास में, पाँचवाँ खण्ड याकूब के जीवन का विवरण 32:1-33:17 में भाइयों के साथ हुए शान्तिपूर्ण विभाजन के बारे में देता है। यह खण्ड दो घनिष्ठ वृतान्तों को आपस में सम्बन्धित करते हुए अपने में सम्मिलित करते हैं। प्रथम, हम देखते हैं कि याकूब का उत्पत्ति 32:1-32 में एसाव से मिलने के लिए तैयारी करना। शत्रुतापूर्ण विभाजन के वर्षों के पश्चात्, याकूब ने एसाव के साथ मिलने की तैयारी अपने से पहले सन्देशवाहकों और भेटों को भेजने के द्वारा किया। होशे 12:4 के अनुसार, एसाव से मिलने से पहले वाली रात को, याकूब ने स्वयं को नम्र किया जब उसने स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध किया और परमेश्वर की आशीष को प्राप्त किया।

> **हम देखते हैं कि प्रतिज्ञा पहले से ही रिबका और याकूब के मध्य में हो गई थी कि याकूब वह होगा जो कि आशीष को प्राप्त करेगा परन्तु जिस तरीके से याकूब आशीष को प्राप्त करता है उसके बारे में यह कि...उसने अपने पिता को धोखा दिया, और उसने, जब उससे उसका नाम पूछा गया, तो उसने कहा, "मेरा नाम एसाव है, तेरा पहिलौठा हूँ।" उसने झूठ बोला...परन्त् परमेश्वर उसे आशीष देता है; परमेश्वर उसे बढ़ाता है, उसे सन्तानों को देता है ताकि अब्राहम को दी हुई प्रतिज्ञा पूरी होनी आरम्भ हो जाए – "जैसे आकाश के तारे हैं वैसे ही तेरी सन्तान होगी" – और तौभी, जब वह प्रतिज्ञात् भूमि की ओर लौट आ रहा था, उसे अपने अतीत का सामना करना पड़ा। उस समय, एसाव से मिलने वाले दिन से पहले की रात में, वह एक स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध करता है और वह उससे पूछता है कि, "तेरा नाम क्या है?" और इस**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

बार वह सच्च कहता है। वह कहता है, "मेरा नाम याकूब है।" और उसे एक नया नाम, इस्राएल, दिया जाता है। - डॉ. क्रेग एस. कीन्नर

33:1-17 में दिया हुआ दूसरा वृतान्त एसाव के साथ याकूब के मेल मिलाप का उल्लेख करता है। इस खण्ड में, भाई आपस में मिलते हैं और फिर शान्ति के साथ एक दूसरे से विदा लेते हैं। इस खण्ड में विरोधाभास और समान्तर बातें स्पष्ट हैं। याकूब और अधिक धोखे से भरा हुआ नहीं रहा परन्तु ईमानदार और विनम्र हो गया है। एसाव ने और अधिक प्रतिशोध को नहीं चाहा अपितु क्षमा को प्रदान कर दिया है। अन्त में, दोनों जुड़वा भाइयों में आरम्भिक शत्रुता एक समाधान की ओर मुड़ गई और वे शान्ति के साथ अपने अपने रास्ते पर चले गए। यह खण्ड उस समय समाप्त हो जाता है जब एसाव कहानी से लुप्त हो जाता है। इसके पश्चात्, अध्याय 34 में, कनानियों का और एक भूगौलिक संदर्भ का प्रकटन होता है। यह सभी बातें मिलकर, उत्पत्ति 29:1-31:55 में याकूब के लाबान के साथ व्यतीत किए हुए समय के महत्वपूर्ण खण्ड की ओर ले जाती हैं।

लाबान के साथ (उत्पत्ति 29:1-31:55)

याकूब का लाबान के साथ व्यतीत किया हुआ समय पाँच हिस्सों में विभाजित किया हुआ है। यह 29:1-14 में याकूब के पद्दमराम में आगमन के साथ आरम्भ होता है। इसके पश्चात् हम 29:14-30 में लाबान के द्वारा याकूब को धोखा दिए जाने के बारे में सीखते हैं जब वह अपनी पुत्रियों को उसे विवाह में देता है। याकूब के विवाह के पश्चात्, 29:31-30:24 में हम याकूब के बच्चों, इस्राएल के गोत्रों के कुलपतियों, के जन्म के बारे में पढ़ते हैं। इसके पश्चात्, लाबान के आरम्भिक धोखे को सन्तुलित करने के लिए, 30:25-43 में, मूसा लाबान के द्वारा याकूब को दिए हुए धोखे के बारे में उल्लेख करता है जब उसने अपने कठोर परिश्रम के लिए मजदूरी की माँग की। अन्त में, 32:1-55 में, हम याकूब के पद्दमराम से प्रस्थान किए जाने को पाते हैं, जिसमें लाबान के साथ शान्ति की एक वाचा को निर्मित किया जाना सम्मिलित है। ये महत्वपूर्ण अध्याय विभिन्न तरह के धोखों और संघर्षों का निपटारा करते हैं। परन्तु, जैसा कि हम कुछ पलों में देखेंगे, ये याकूब के जीवन में एक आमूल परिवर्तन को ले आए।

जह हम याकूब की कथा को उत्पत्ति 25-37 में देखते हैं, तो हम एक परिवर्तनों की एक उल्लेखनीय श्रृंखला को पाते हैं जो कि याकूब के जीवन में घटित हुए। जैसा कि वह एक धोखेबाज के रूप में आरम्भ करता है, तब उसके पास परमेश्वर की ओर से अनुग्रह से भरा हुआ आश्चर्यजनक प्रकाशन आता है जिसमें परमेश्वर धोखे का उल्लेख नहीं करता है जिसे याकूब अभी तक उपयोग करता आया था अपितु इसकी अपेक्षा वह उसके साथ अब्राहम को की हुई सभी प्रतिज्ञाओं का नवीकरण करता है। और याकूब एक व्यवसायी बन जाता है जो कि परमेश्वर के साथ एक सौदा करता है, कि यदि परमेश्वर उन प्रतिज्ञाओं के ऊपर खड़ा रहता है, तो उसे इनकी थोड़ी सी आशीष देगा। परन्तु यह कैसा सौदा था क्योंकि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं पर उस समय भी खड़ा हुआ था जब याकूब एक व्यक्ति के साथ मुलाकात करता है जो कि उससे भी ज्यादा धोखे देने वाला था जो लाबान नामक व्यक्ति था। और जैसा कि याकूब परमेश्वर की आशीष को अपने जीवन में देखता है, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वह अधिक से अधिक परमेश्वर में भरोसा रखने की इच्छा करता जाता है – कम से कम न्यूनत्तम तरीकों से – ताकि जब परमेश्वर उसे घर जाने के लिए कहे, तो वह ऐसा कर सके। और अन्त में, व्यापारी को धोखा हो जाता है जब वह इन शब्दों को सुनता है कि उसका भाई अपने साथ शास्त्र सहित पुरूषों को लेकर आ रहा है। और तब हार हुआ छुटकारा पाता है जब परमेश्वर आता है और याकूब कहता है कि, "यह *तेरी* आशीष है जो मेरे पास है – न कि मेरे पिता की, न ही एसाव की। यह तेरी आशीष है!" और तब अतत: इसके पश्चात् इस तरह से, वह ऐसे स्थान पर लाया गया जहाँ पर वह परमेश्वर में अपने आप को अधीन करने और उसमें भरोसा रखने के योग्य हो सका और अब और अधिक उसे हेराफेरी करने की वाला बनने की आवश्यकता नहीं थी जो कि स्वयं के लिए सब कुछ को पाने क लिए प्रयास करता है। - डॉ. जॉन ओलवाल्ट

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

कुलपति याकूब के ऊपर हमारे इस अध्याय में हमने अभी तक उत्पत्ति की पुस्तक में से याकूब के जीवन की संरचना और विषय-वस्तु की खोज की। अब हमें हमारे दूसरे मुख्य विषय: जो इन अध्यायों में मुख्य विषयों के रूप में प्रगट होते हैं, की ओर मुड़ना चाहिए।

मुख्य विषय

दुर्भाग्य से, मसीह के अनुयायी अकसर ऐसा व्यवहार करते हैं कि मानो याकूब की कहानी मूलभूत रूप से व्यक्तिगत् विश्वासियों के लिए सीधे उनके व्यक्तिगत् जीवन में इसे लागू करने के लिए लिखी गई थी। इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि उत्पत्ति के इस भाग को बहुत कुछ कहना है कि कैसे एक व्यक्ति को जीवन यापन करना चाहिए। परन्तु हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि उत्पत्ति इस अपेक्षा के साथ नहीं लिखी गई थी कि एक सामान्य विश्वासी इसे पढ़ने के योग्य हो सकेगा। पवित्रशास्त्र तक केवल प्राचीन इस्राएल में अगुवों की ही पहुँच थी। इस कारण, याकूब का जीवन मूलभूत रूप से उन विषयों को सम्बोधित करने के लिए लिखे गए थे जो कि पूरी इस्राएल जाति से सम्बन्धित थे। परमेश्वर ने इस्राएल को प्रतिज्ञात् भूमि के ऊपर उसके राज्य के निर्माण के मिशन के लिए भेजा था। और फिर वहाँ से उसके राज्य को पृथ्वी की अन्तिम छोर तक फैल जाना चाहिए था। और राज्य के निर्माण का ये मिशन हमें प्राचीन इस्राएल और आपके लिए और मेरे लिए जो आज मसीह के राज्य में जीवन यापन कर रहे हैं, के लिए हमें याकूब के जीवन में से मुख्य विषय की पहचान करने में सहायता करता है।

अब्राहम के ऊपर हमारे अध्याय में, हमने देखा कि मूसा ने चार मुख्य विषयों: अब्राहम के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह, परमेश्वर के प्रति अब्राहम की निष्ठा, परमेश्वर के प्रति अब्राहम की निष्ठा, अब्राहम के प्रति परमेश्वर की आशीष और अब्राहम के द्वारा परमेश्वर की आशीष के ऊपर जोर दिया था। यही विषय याकूब के जीवन में भी एक प्रकट होते हैं। इसी कारण से, हम इस बात के ऊपर ध्यान देंगे कि कैसे याकूब के जीवन की कहानी इन चार मुख्य विषयों के ऊपर जोर देती है। प्रथम, हम इस्राएल के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह के ऊपर विचार विमर्श करेंगे; दूसरा, परमेश्वर के प्रति इस्राएल की निष्ठा या विश्वासयोग्यता की शर्तें; तीसरा, इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीष; और चौथा, इन अध्यायों का सबसे महत्वपूर्ण गुण, इस्राएल के *द्वारा* अन्यों को परमेश्वर की आशीष। आइए याकूब की कहानी के उन कुछ तरीकों से आरम्भ करें जो इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

इस्राएल के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह

हम इस्राएल के ऊपर परमेश्वर के अनुग्रह को दो तरीकों से खोज करेंगे। एक तरफ तो, हम यह देखेंगे कि कैसे यह विषय मूसा के मूल अर्थ के ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है, कैसे वह उसके प्राचीन इस्राएली पाठकों को प्रभावित करना चाहता था। दूसरी तरफ, हम उन कुछ तरीकों के ऊपर ध्यान देंगे जिनमें ईश्वरीय अनुग्रह को उत्पत्ति के इस भाग के हमारे आधुनिक उपयोग को प्रभावित करना चाहिए। आइए सर्वप्रथम मूसा के मूल अर्थ को देखें।

मूल अर्थ

सामान्य अर्थ में, परमेश्वर के अनुग्रह को इस्राएल के लोगों को उनके जीवन में शिक्षा देने के लिए, मूसा ने याकूब के जीवन में ईश्वरीय अनुग्रह के ऊपर तीन तरीकों से जोर दिया है।

अतीत का अनुग्रह – सबसे पहले यह ध्यान दें कि कैसे परमेश्वर ने याकूब को अतीत के अनुग्रह के बारे में उसके दिखाया इससे पहले कि उसका जन्म हुआ था। याकूब की कहानी के आरम्भिक वृतान्त इस विषय की ओर ध्यान को आकर्षित करते हैं। आइए उत्पत्ति 25:23 को एक बार फिर से सुनिए जहाँ पर परमेश्वर ने रिबका को ऐसे कहा कि:

> **तेरे गर्भ में दो जातियाँ हैं, और तेरी कोख से निकलते ही दो राज्य के लोग अलग अलग होंगे, और एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा (उत्पत्ति 25:23)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

रोमियों 9:11-12 में, प्रेरित पौलुस ने यह टिप्पणी दी है कि याकूब ने परमेश्वर की दया को उसके द्वारा सही या गलत करने से पहले ही प्राप्त कर लिया था। बहुत कुछ इसी तरह से, परमेश्वर की दया इस्राएल के गोत्रों के लिए यह थी जो मूसा का अनुसरण प्रतिज्ञात् भूमि पर जाने के लिए कर रहे थे, के ऊपर भी अतीत में परमेश्वर की दया बनी हुई थी। व्यवस्था विवरण 7:7-8 में मूसा इसे कुछ इस तरह से लिखता है:

यहोवा ने जो तुम से स्नेह करके तुम को चुन लिया, इसका कारण यह नहीं था कि तुम गिनती में और सब देशों के लोगों से अधिक थे, किन्तु ... तुम को बलवन्त हाथ के द्वारा दासत्व के घर में से...छुड़ाकर निकाल लिया, इसका यही कारण है कि वह तुम से प्रेम रखता है, और उस शपथ को भी पूरी करना चाहता है जो उस ने तुम्हारे पूर्वजों से खाई थी (व्यवस्था विवरण 7:7-8)।

चलते रहने वाला अनुग्रह – दूसरे स्थान पर, मूसा ने याकूब के जीवन में परमेश्वर के चलते रहने वाले अनुग्रह की आवश्कता के मुख्य अंशों पर भी जोर दिया। इसने इस्राएलियों को यह शिक्षा दी कि उन्हें उनके जीवनों में परमेश्वर के चलते रहने वाले अनुग्रह की कितनी ज्यादा आवश्यकता थी। यह ध्यानाकर्षण सर्वप्रथम उत्पत्ति 25:24-26 में याकूब के जन्म के समय प्रगट होता है। सुनिए उत्पत्ति 25:26 को:

पीछे, उसका भाई अपने हाथ से एसाव की एड़ी पकड़े हुए उत्पन्न हुआ; और उसका नाम याकूब रखा गया (उत्पत्ति 25:26)।

याकूब ने इस नाम को इसलिए प्राप्त किया क्योंकि वह अपने भाई "एसाव की एड़ी पकड़े" हुए था, जब वे जन्म ले रहे थे। याकूब का नाम इब्रानी भाषा में יַעֲקֹב *(याकोब)*, उसी मूल शब्द से निकला है जिसे एड़ी या इब्रानी भाषा में עָקֵב *(अकीब)* के लिए अनुवाद किया गया है। कुल मिलाकर, याकूब के नाम का अर्थ है वह जो "एड़ी को पकड़ लेता है।" परन्तु, इस घटना में, उसका नाम तोड़फोड़ करने वाले और धोखे देने वाले का अर्थ देता है क्योंकि याकूब ने उसके जन्म के समय से ही पहिलौठेपन का अधिकार छीनने का प्रयास किया था। हम यहाँ तक कि यह कह सकते हैं कि याकूब के नाम का अर्थ बहुत कुछ "चालबाज़" के रूप में हो सकता है। यह उत्पत्ति 27:36 में एसाव की प्रतिक्रिया का विवरण देता है जब याकूब ने इसहाक को धोखा देते हुए उससे एसाव की आशीष को ले लिया था।

उस ने कहा, "क्या उसका नाम याकूब यथार्थ नहीं रखा गया? उसने मुझे दो बार अड़ंगा मारा। मेरा पहिलौठे का अधिकार तो उसने ले ही लिया था; और अब देख, उसने मेरा आशीर्वाद भी ले लिया है (उत्पत्ति 27:36)।

याकूब का नाम उचित ही उसके कार्यों से मेल खाता है और इससे स्पष्ट हो जाता है कि उसे परमेश्वर के निरन्तर चलते रहने वाले अनुग्रह की प्रतिदिन उसके जीवन में आवश्यकता थी। मूसा अक्सर परमेश्वर के चलते रहने वाले अनुग्रह की ओर ध्यान को आकर्षित करता है जो कि विशेष रूप से उसके मूल पाठकों के लिए प्रासंगिक थे।

उदाहरण के द्वारा, उत्पत्ति 36:26-33 में, परमेश्वर ने याकूब के पिता, इसहाक को, पलिश्तियों के मध्य में सुरक्षा प्रदान करते हुए दया दिखाई दी। जब मूसा ने इन अध्यायों को लिखा, तो उसके इस्राएली पाठकों को भी पलिश्तियों से अपनी सुरक्षा को प्राप्त करने की आवश्यकता थी। इसके अतिरिक्त, 34:1-31 में, परमेश्वर ने कृपा से भर कर याकूब को कनानियों के ऊपर विजय दिलाई। इस उदाहरण के द्वारा, मूसा ने उसके मूल पाठकों को शिक्षा दी कि कैसे उन्हें उनके दिनों में कनानियों के ऊपर विजय पाने के लिए परमेश्वर के निरन्तर चलते रहने वाले अनुग्रह की आवश्यकता थी।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

भविष्य का अनुग्रह – तीसरे स्थान पर, याकूब की कहानी का ध्यान परमेश्वर के भविष्य के अनुग्रह के ऊपर केन्द्रित है। एक बार फिर से, हम मूसा के विवरण के आरम्भिक वृतान्तों में इस विषय को देखते हैं। जैसा कि आपको स्मरण होगा कि, उत्पत्ति 25:23 में, याकूब के जन्म से पहले ही, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि:

एक राज्य के लोग दूसरे से अधिक सामर्थी होंगे और बड़ा बेटा छोटे के अधीन होगा (उत्पत्ति 25:23)।

यह प्रतिज्ञा सूचना देती है कि इस्राएली बहुत अच्छी तरह से प्रतिज्ञात् भूमि में स्थापित हो जाएंगें यहाँ तक कि वे अपने राज्य का विस्तार करेंगे – और इस प्रकार *परमेश्वर के* राज्य का – एसाव के वंशजों की भूमि के ऊपर करेंगे। और भविष्य के अनुग्रह की यह प्रतिज्ञा विशेष रूप से मूसा के मूल पाठकों के लिए प्रासंगिक थी जब उन्होंने अपने दिनों में एदोमियों के साथ व्यवहार रखा।

और परमेश्वर ने याकूब के जीवन में भविष्य के अनुग्रह के प्रति अन्य कई प्रतिज्ञाएँ भी की। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 28:10-12 में बेतेल में याकूब के स्वप्न में, परमेश्वर ने याकूब को भविष्य की दया का आश्वासन दिया। और इसके पश्चात्, परमेश्वर ने 35:11-12 में बेतेल में याकूब के द्वारा आराधना किए जाने के समय इसी तरह के अनुग्रह की प्रतिज्ञाओं की पुष्टि की है। याकूब को इस तरह के भविष्य के अनुग्रह की प्रतिज्ञाएँ मुसा के पाठकों को उज्जवल भविष्य दिखाती हैं जब वे कनान के ऊपर विजय पाने और इसमें बसने के लिए इसकी ओर आगे बढ़ रहे थे।

यह समझने के लिए कि कैसे याकूब की कहानियाँ इस बात के ऊपर जोर देती हैं कि इस्राएल के पास प्रतिज्ञात् भूमि के ऊपर वास करने का उचित अधिकार था, हमें कम से कम दो विभिन्न बातों को स्मरण रखना होगा। इनमें से एक यह है कि ये कहानियाँ मूल रूप से याकूब और एसाव का विरोधाभास है – ऐसे समूह जो कि आपस में एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जैसा कि यह, अब्राहम की प्रतिज्ञाओं की वास्तविक उत्तराधिकारी हो। और याकूब और एसाव की कहानियाँ, उनके मध्य में विरोधाभास स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि एसाव दक्षिण की ओर एदोमियों की ओर चला गया और यह कि परमेश्वर ने उसे वह भूमि दे दी – यह कि जहाँ पर परमेश्वर ने उसे स्थापित कर दिया – और यह कि याकूब, इसकी अपेक्षा, अब्राहम को दी हुई प्रतिज्ञात् भूमि का वास्तविक प्रतिज्ञा पाया हुआ उत्तराधिकारी है। परन्तु आप इसे लाबान की कहानी में भी पढ़ सकते हैं जब याकूब उसे छोड़ता है। वे उसके उत्तर की ओर पड़ोसी हैं, उसके सम्बन्धी हैं, परन्तु वह वहाँ कुछ समय को छोड़ कर ज्यादा देर नहीं रहता है। परन्तु इन विरोधाभासों से अधिक महत्वपूर्ण यह है, कि याकूब/एसाव के मध्य, सच्चाई यह हैकि जब याकूब प्रतिज्ञात् भूमि को छोड़ रहा था, अपने पिता को धोखा देने के पश्चात्, अपने भाई को धोखा देने के पश्चात्; वह प्रतिज्ञात् भूमि को छोड़ रहा था। अध्याय 28 में, उसके पास बेतेल में जाना-पहचाना स्वप्न मिलता है जहाँ वह परमेश्वर और उसके स्वर्गदूत को उसके आगे प्रगट होते हुए पाता है और तब याकूब कहता है कि, "क्या तू मुझे बस केवल आश्वसन दे देगा कि मैं इस भूमि में एक दिन वापस आ जाऊँगा?" और परमेश्वर उसे आश्वासन देता है वह ऐसा करेगा। और तब अध्याय 35 में, आपको उस घटना का स्मरण दिलाया गया है जहाँ पर परमेश्वर उससे कहता है, "बेतेल को चला जा; वेदी का निर्माण कर। उस स्थान पर जिसे मैंने तुझे बताया है एक वेदी का निर्माण कर जहाँ मैं तुझे लौटा ले आऊँगा।" और बेतेल जैसा कि हम जानते हैं, प्रतिज्ञात् भूमि में है। और याकूब के जीवन में वे दो संदर्भ सकारात्मक रूप से इस विचार के ऊपर जोर देते हैं कि यह भूमि है जिसे परमेश्वर ने याकूब को उसकी सभी नाकामियों के बावजूद, उसके द्वारा उसके भाई को धोखा देने के बावजूद, उसके पिता को धोखा देने, यहाँ तक कि लाबान की भूमि में उसके किए हुए कार्य जो कि संदिग्ध थे, दे दिया है। इन सब बातों के बावजूद, परमेश्वर ने याकूब को ऐसे चुना कि वही उस भूमि को प्राप्त करेगा जिसे उसके पूर्वज अब्राहम को देने की प्रतिज्ञा की गई है। - डॉ. रिचर्ज एल, प्रॉट, जूनियर

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब क्योंकि हमने इस्राएल के ऊपर परमेश्वर के अनुग्रह को उसके मूल अर्थ को ध्यान में रखते हुए देख लिया है, इसलिए आइए हम कुछ ऐसे तरीकों को स्पर्श करें जिनमें परमेश्वर के अनुग्रह के याकूब की कहानी के आधुनिक उपयोग को प्रभावित करना चाहिए।

आधुनिक उपयोग

इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि मसीह के अनुयायी होने के नाते हमारे जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह के विषय को लागू करने के लिए असँख्य तरीके हैं। परन्तु, सुविधा के लिए, हम मसीह के राज्य के उदघाटन, कलीसिया के पूरे इतिहास में राज्य की निरन्तरता, और महिमा सहित उसके पुनरागमन के समय राज्य की पराकाष्ठा या शिरोबिन्दु के शब्दों में इसके ऊपर विचार करेंगे। मसीह के राज्य की ये तीन अवस्थाएँ उन कुछ तरीकों को प्रस्तुत करती हैं जिनमें नया नियम मसीह के अनुयायियों को उनके जीवनों में परमेश्वर के अतीत, चलते रहने वाले और भविष्य के अनुग्रह को प्रस्तुत करता है।

पहले स्थान पर, मसीह के अनुयायी होने के नाते, जब हम याकूब के जीवन में अतीत के अनुग्रह का प्रदर्शन देखते हैं, तो हमें स्मरण करना चाहिए कि कैसे परमेश्वर ने अपने अतीत के अनुग्रह को विशेषकर मसीह के राज्य के उदघाटन के समय प्रकाशित किया था। मसीह का प्रथम आगमन अनुग्रह के एक लम्बे इतिहास के अन्त में आकर खड़ा होता है जो कि पूरे पुराने नियम में चलता रहा है। और रोमियों 5:20 जैसे संदर्भ यह सूचित करते हैं, कि परमेश्वर ने मसीह के प्रथम आगमन से पहले और ज्यादा और अधिक दया और अनुग्रह को दिखाया था। जैसा कि पौलुस लिखता है कि:

परन्तु जहाँ पाप बहुत हुआ वहाँ अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ (रोमियों 5:20)।

दूसरे स्थान पर, परमेश्वर का याकूब के जीवन में चलते रहने वाला अनुग्रह हमें स्मरण दिलाता है कि हम मसीह के राज्य की निरन्तरता के मध्य में परमेश्वर के चलते रहने वाली दया की खोज करें और उसके ऊपर निर्भर रहें। इब्रानियों 4:16 जैसे संदर्भ हमें बताते हैं, कि मसीह के अनुयायी होने के नाते हम, "हम [परमेश्वर] अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बाँधकर" चल सकते हैं। और हम उस "अनुग्रह को पाएँगे जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करेगा।"

और तीसरा, जब हम याकूब के प्रति भविष्य के अनुग्रह के लिए परमेश्वर के आश्वासन को देखते हैं, तो हमें परमेश्वर के भविष्य के अनुग्रह को स्मरण रखना चाहिए जो कि मसीह के राज्य की पराकाष्ठा के समय में प्रगट होगा। बहुत कुछ मूसा के मूल पाठकों के तरह जिन्होंने प्रतिज्ञात् भूमि में परमेश्वर के भविष्य के अनुग्रह के बारे में शिक्षा पाई थी, मसीह के अनुयायियों को नई सृष्टि में परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के पूरा होने की लालसा करनी चाहिए। इफिसियों 2:7 जैसे संदर्भ हमें स्मरण दिलाते हैं, कि मसीह के पुनरागमन के समय, हम उसके [परमेश्वर] के अनुग्रह के असीम धन का अनुभव करेंगे।"

इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा

अब क्योंकि हमने इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह के मुख्य विषय को स्पर्श कर लिया है, हमें दूसरे मुख्य विषय: इस्राएल की परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता की शर्त की ओर मुड़ना चाहिए। दोनों अर्थात् पुराना और नया नियम यह स्पष्ट कर देता है कि शाश्वत उद्धार पूर्ण रूप से परमेश्वर के अनुग्रह से ही प्रदान किया जाता है। कोई भी कर्मों के द्वारा उद्धार को पाने के योग्य नहीं हुआ है। परन्तु पवित्रशास्त्र यह भी स्पष्ट कर देता है कि जब लोग परमेश्वर के अनुग्रह को प्राप्त करते हैं, तब परमेश्वर का आत्मा उन्हें परिवर्तित करना आरम्भ कर देता है, और वे परमेश्वर के आदेशों को उसकी कई दया के कारण अपने हृदय की कृतज्ञता से पालन करना आरम्भ कर देते हैं। यह हमारे भीतर में परमेश्वर की आत्मा का फल है। जैसा कि हम याकूब के जीवन में परमेश्वर की निष्ठा के विषय को देखते हैं, हमें सदैव इन मूल धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को ध्यान में स्मरण रखना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

जो कुछ हमने कहा उसे देखने के लिए, हमें इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा को मूसा के वास्तविक अर्थ के पहलू के रूप में देखना चाहिए और इसके पश्चात् इस विषय के आधुनिक उपयोग की ओर मुड़ जाना चाहिए। आइए सर्वप्रथम मूसा के मूल अर्थ के ऊपर ध्यान दें।

मूल अर्थ

सामान्य अर्थ में, मूसा ने परमेश्वर के प्रति याकूब की निष्ठा के ऊपर जोर उसके मूल पाठकों को उनके दिनों में परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य रहने की बुलाहट को देकर दिया है। स्पष्ट तरीकों में से एक में मूसा ने ऐसा इस ओर संकेत देने के लिए किया कि कैसे परमेश्वर ने याकूब को उसके निष्ठावान् सेवक के रूप में परिवर्तित कर दिया। याकूब की कहानी के आरम्भिक खण्डों में, कुलपति को विस्तृत रूप में एक नकारात्मक प्रकाश की तरह दर्शाया गया है। याकूब का जन्म हमें दर्शाता है कि वह उसके भाई की एड़ी को पकड़े हुए है, और इस तरह से वह उसके पहिलौठेपन के अधिकार को पकड़ना चाहता है। अपने लड़कपन के समय, हम सीखते हैं कि याकूब ने एसाव की भूख से लाभ उठाते हुए एसाव से उसके पहिलौठेपन के अधिकार को अपने लिए सुरक्षित कर लेने के द्वारा प्राप्त किया। उसने अपने बुर्जुग पिता को एसाव के आर्शीवाद को पाने के लिए धोखा दे दिया। उसके आरम्भिक नकारात्मक चित्रणों में केवल एक ही अपवाद हमें याकूब के बेतेल में शपथ को लिए जाने में मिलता है जहाँ पर वह शपथ लेता है कि यदि परमेश्वर उसे सुरक्षा देगा, तो यहोवा उसका परमेश्वर होगा।

अब, इस शपथ का अनुसरण करते हुए, याकूब लाबान के साथ रहने के लिए चला गया। ऐसा आभासित होता है, कि याकूब के हृदय में परमेश्वर के प्रति बोया हुआ निष्ठा का बीज विकास करने लगा था। अपने ससुर से दुर्व्यवहार को पाने के बावजूद, जब याकूब लाबान के साथ अपने व्यतीत किए हुए समय को पूरा करने के पश्चात् वापस लौटता है, तो वह एक नया व्यक्ति बन जाता है।

मूसा ने इस परिवर्तन को कम से कम चार तरीकों से प्रमाणित किया है। प्रथम, मूसा ने यह उल्लेख किया है कि याकूब ने एसाव के प्रति पश्चाताप को दिखाया। 32:4-5 में, याकूब ने अपने सेवकों को अपने बदले में एसाव को उसके "स्वामी के रूप" में को सम्बोधित करने को कहा। और जब याकूब अन्त में एसाव से उत्पत्ति 33:8 में मिलता है, तो वह निरन्तर उसे "हे मेरे प्रभु" कह कर पुकारता है।

दूसरा, याकूब ने परमेश्वर के प्रति पश्चाताप को प्रगट किया। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 32:10 में याकूब ने परमेश्वर के सामने अंगीकार किया:

> **तूने जो जो काम अपनी करूणा और सच्चाई से अपने दास के साथ किए हैं...उनमें से में एक के भी योग्य तो नहीं हूँ (उत्पत्ति 32:10)।**

तीसरा, याकूब परमेश्वर से एक नए नाम को प्राप्त किया। उत्पत्ति 32:22-32 में, याकूब यब्बोक नदी के घाट पर एक स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध करता है। वचन 27 में, याकूब ने आवश्यक रूप से स्वर्गदूत के सामने अपने नाम को याकूब होना स्वीकार करते हुए अंगीकार कर लिया कि वह "धोखा" देने वाला था। परन्तु स्वर्गदूत ने याकूब के अंगीकार के प्रति उत्पत्ति 32:28 में प्रतिक्रिया करते हुए कहा कि:

> **तेरा नाम अब याकूब नहीं, परन्तु इस्राएल होगा, क्योंकि तू परमेश्वर से और मनुष्यों से भी युद्ध करके प्रबल हुआ है (उत्पत्ति 32:28)।**

बाइबल में कई अन्य नामों की तरह, यह नाम יִשְׂרָאֵל *(इस्राएल)*, इतिहास में किसी समय, परमेश्वर की स्तुति के लिए उपयोग होता था जिसका अर्थ, "परमेश्वर संघर्ष" करता या "लड़ता" है से है। यह इब्रानी भाषा की क्रिया שָׂרָה *(साराह)* से निकल कर आता है, जिसे वचन 28 में "तू प्रबल हुआ" के रूप में अनुवाद किया गया है। स्वर्गदूत ने यह विवरण दिया कि यह नाम याकूब के ऊपर विशेष रूप में लागू किया गया था क्योंकि वह परमेश्वर और मनुष्य से भी युद्ध करके प्रबल हुआ [था]।" याकूब ने परमेश्वर के साथ संघर्ष किया था जिसका संकेत इस दृश्य में आशीष के लिए मल्लयुद्ध की ओर है। और, सभी संभावनाओं में, याकूब का मनुष्यों के साथ संघर्ष एसाव और लाबान के साथ हुए संघर्ष की ओर संकेत करता है। याकूब के जीवन के संदर्भ में, उसका नया

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

नाम संकेत देता है कि वह एक नया व्यक्ति था। एक धोखा देने वाला बने रहने की अपेक्षा, याकूब "इस्राएल" बन गया था, वह जिसने संघर्ष किया और प्रबल हुआ था।

> **आप उत्पत्ति की पुस्तक में याकूब के नाम को स्वयं परमेश्वर के द्वारा इस्राएल में परिवर्तित कर दिए जाने की दिलचस्प कहानी को पढ़ते हैं। याकूब ने एक स्वर्गदूत के साथ मल्लयुद्ध किया था और उसने जान लिया था कि वह स्वर्गदूत परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कर रहा था; यह परमेश्वर का दूत था। और उसने जान लिया था कि परमेश्वर के पास उसके लिए एक विशेष योजना थी। परमेश्वर ने उसके ऊपर ध्यान दिया था, उससे मुलाकात की थी, उसके लिए उसके पास उद्देश्य था जो कि बहुत ही, बहुत ही महत्वपूर्ण था। और इसलिए, उसका नाम परिवर्तित हो गया...प्राचीन इस्राएल में, हम जानते हैं कि लोग बच्चों के नाम उस समय तक नहीं रखते थे जब कि वह जन्म नहीं ले लेते थे। वह उनका नाम पहले से ही नहीं रख देते थे। वह नहीं कहते थे कि यदि यह लड़का होगा तो हम इसे यह नाम देंगे, और यदि यह लड़की होगी तो हम इसे वह नाम देंगे। इसकी अपेक्षा, वह किसी तरह के संकेत को, किसी तरह के चिन्ह की, किसी तरह के निर्देश को प्राप्त करने की प्रतीक्षा करते थे। अब, यही कुछ याकूब के साथ घटित हुआ जब उसने जन्म लिया था क्योंकि – जब वह गर्भ से बाहर आया – तो अपने भाई एसाव की एड़ी को पकड़े हुआ था। इस तरह से, उसने इस नाम *"याकोव"* को इब्रानी में प्राप्त कर लिया, जिसका अर्थ "एड़ी" या "एड़ी को पकड़े हुए," या "एड़ी-की तरह का व्यक्ति" के होने से होता है। और उसने इसे अपने पूरी जीवन में उपयोग किया...परन्तु वह उस समय एक नए जीवन में आ गया जब उसकी मुलाकात परमेश्वर के साथ हुई। जब परमेश्वर ने याकूब को पकड़ लिया और उसके उसका वास्तविक उद्देश्य दे दिया, कि वह एक जाति का पिता होगा, यहाँ तक कि अपने पिता इसहाक और अपने दादा अब्राहम से भी ज्यादा सीधे तरीके से – एक बहुत ही सीधे तरीके से उसे यह कहा गया... और इस तरह से याकूब इस्राएल में परिवर्तित हो गया जो कि वास्तव में एक सुन्दर बात है और हम इसमें परमेश्वर की भूमिका की सराहना करते हैं, उसे तुरन्त ही इस्राएल की जाति का पिता कह कर पुकारने के लिए वह उसकी सेवा करे और सन्तान को उत्पन्न करे जिसके द्वारा वह पृथ्वी पर अपने लिए प्रथम लोगों की रचना करेगा। - डॉ. डगलस स्टूट्र**

मूसा के मूल पाठकों के लिए याकूब के नए नाम को ज्यादा मूल्य के समझने में कठिनाई होगी। "इस्राएल" मूसा के द्वारा मिस्र की भूमि से प्रतिज्ञात् भूमि की ओर नेतृत्व दिए जाने वाले बारह गोत्रों का राष्ट्रीय नाम था। जब उन्होंने कुलपति के नए नाम को परमेश्वर के विश्वासयोग्य सेवक के रूप में सुना, तो उन्हें स्मरण आया, कि इस्राएल होने के नाते, उन्हें याकूब की तरह संघर्ष करने और इसके ऊपर विजय पाने के लिए बुलाहट दी गई थी।

लाबान के साथ समय व्यतीत कर लेने के पश्चात्, याकूब का चौथा सकारात्मक चित्रण, जब वह बेतेल में वापस लौटा तो उसके द्वारा की गई ईमानदारी से भरी हुई आराधना थी। ठीक वैसे ही जैसे उसने बेतेल में उत्पत्ति 28:20-21 में परमेश्वर के प्रति निष्ठावान् बने रहने की प्रतिज्ञा की थी, याकूब ने एक वेदी को निर्मित किया और यहोवा की आराधना बेतेल में उत्पत्ति 35:3 में पूरी ईमानदारी से की।

याकूब के परिवर्तन के बारे में मूसा के द्वारा उसके मूल पाठकों को दिए हुए विवरण के दो मुख्य उपयोग थे। उसने याकूब के *निष्ठाहीन* होने को प्रस्तुत किया क्योंकि उसके पाठकों को उन कई तरीकों का सामना करना था जिनमें वे परमेश्वर के प्रति निष्ठाहीन रहे थे। परन्तु उसने साथ ही याकूब के परिवर्तन को परमेश्वर के प्रति एक निष्ठावान सेवक के रूप में अपने पाठकों को उनके अपने दिनों में याकूब की *निष्ठा* का अनुसरण करने के लिए उत्साहित करने के लिए प्रस्तुत करके भी किया। और जितनी अधिक मूसा के मूल पाठकों को परमेश्वर के अनुग्रह के ऊपर निर्भर रहने की आवश्यकता थी, उसी के साथ उन्हें परमेश्वर के प्रति निष्ठा से भरी हुई सेवकाई के लिए स्वयं को समर्पित करने की आवश्यकता थी जब वे प्रतिज्ञात् भूमि में जीवन की चुनौतीयों को सामना करते।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

अब क्योंकि हमने परमेश्वर के प्रति मूसा के मूल अर्थ के सम्बन्ध में इस्राएल की निष्ठा के विषय का अवलोकन कर लिया है, हमें इस विषय के ऊपर याकूब के जीवन को आधुनिक उपयोग के पहलूओं के लिए भी देखना चाहिए। हमारे प्रयोजनों के लिए, हम एक बार फिर से इस ओर मुड़ेंगें कि कैसे याकूब के जीवन का यह आयाम मसीह के राज्य के उदघाटन, निरन्तरता और पराकाष्ठा के शब्दों में हम पर लागू होता है।

आधुनिक उपयोग

पहले स्थान पर, याकूब के जीवन के किसी भी समय का विवरण हमें परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्यता के लिए हमारे दायित्व के ऊपर विचार करने के लिए नेतृत्व प्रदान करता है, कि हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि कैसे स्वयं मसीह ने उसके राज्य के उदघाटन में सभी तरह की धार्मिकताओं को पूरा किया। इब्रानियों 4:15 हमें कहता है कि मसीह ठीक हमारी ही परीक्षा में पड़ा, परन्तु उसने कभी पाप नहीं किया। सच्चाई तो यह है, कि मसीह परमेश्वर के आदेश के प्रति इतना ज्यादा निष्ठावान था कि वह स्वैच्छा से वे सब जो उसमें विश्वास करेंगे के लिए परमेश्वर के न्याय के अधीन क्रूस के ऊपर मर गया। और उसकी सिद्ध धार्मिकता विश्वास के द्वारा हम में रोपित की गई है। उसके राज्य के उदघाटन के समय मसीह के स्वयं व्यक्तिगत् निष्ठा हमें याकूब के जीवन से प्राप्त होने वाली शिक्षाओं को नैतिकता - अर्थात् "इसे करो; उसे न करो" तक सीमित कर देने से दूर कर देती है। याकूब के जीवन की प्रत्येक नैतिक शिक्षा के उपयोग को सर्वप्रथम इस दृष्टिकोण से देखा जाना चाहिए जैसे कि मसीह की स्वयं धार्मिकता हमारे बदले में पूरी की गई है।

दूसरे स्थान पर, जब हम याकूब की कहानी में निष्ठा के विषय को देखते हैं, तो हम मसीह के लिए आज निष्ठावान सेवकाई के लिए हमारे अपने लिए मार्गदर्शन को पाते हैं। मसीह के राज्य की निरन्तरता के समय, याकूब का जीवन हमें परमेश्वर के प्रति हमारी स्वयं की निष्ठा से भरी हुई सेवकाई के ऊपर विचार करने के लिए बुलाता है। हम इब्रानियों 12:1-2 जैसे संदर्भों का स्मरण आता है जो हमें उन विश्वासयोग्य लोगों का अनुसरण करने के लिए उत्साहित करते हैं जो हम से पहले आगे जा चुके हैं, जिसमें याकूब भी सम्मिलित है।

और तीसरे स्थान पर, याकूब की कहानी का प्रत्येक पहलू जो मनुष्य के निष्ठावान होने की शर्त को स्पर्श करता है, को हमारे ह्रदयों को परमेश्वर के राज्य की पराकाष्ठा के समय मसीह के प्रति निष्ठावान होने की ओर मोड़ना चाहिए। निष्ठा का विषय हमें स्मरण दिलाता है कि हम जो मसीह के अनुयायी हैं एक दिन परमेश्वर के सिद्ध, विश्वासयोग्य सेवकों के रूप में परिवर्तित हो जाएंगे। 1 यूहन्ना 3:2 जैसे संदर्भ हमें शिक्षा देते हैं, कि जब मसीह का पुनरागमन होगा, "तो हम उसके जैसे हो जाएंगे।"

> **हम आज याकूब की कहानियों को हमारे जीवनों में यह देखते हुए लागू कर सकते हैं कि याकूब को परमेश्वर की आशीष देने की प्रतिज्ञा की गई थी। यह परमेश्वर का वचन है जिसने यह प्रतिज्ञा दी कि उसने अपने प्रेम को याकूब के ऊपर रख दिया था और फिर भी, याकूब ने अपने जीवन का बहुत अधिक समय जोड़ तोड़ के माध्यम से प्राप्त करने के प्रयास में व्यतीत कर दिया, जिसे लिए परमेश्वर ने पहले से ही प्रतिज्ञा कर दी थी। इस तरह से, हम अकसर याकूब की तरह हैं। हम जीवन में प्राप्त करने का प्रयास – कई बार किसी भी उपलब्ध तरीके से करते हैं – जिसे परमेश्वर ने पहले से प्रतिज्ञा कर दिया है, सच्चाई तो यह है कि उसने पहले से हमें मसीह में दे दिया है। नए नियम का कोई भी वचन ऐसा नहीं बोलता है कदाचित् रोमियों 8:32 के साथ: "जिसने अपने निज पुत्र को न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?" मसीह के द्वारा हम विशेष रूप से भजन संहिता 46 के शब्दों को सुन सकते हैं: "चुप हो जाओ, और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ, " और मैं इसमें यह जोड़ देना चाहता हूँ – कि यह जान लो कि वह भला परमेश्वर है, अपनी वाचा की सन्तान की प्रति दयालु है। रेव्ह. माईकल जे. गाल्डो**

इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह और इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा के मुख्य विषयों की ओर देख लेने के पश्चात्, हमें उत्पत्ति के इस भाग के तीसरे मुख्य विषय: इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीष की ओर मुड़ना चाहिए।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीष

इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीष की जाँच हम उसी तरीके से करेंगे जिसमें हमें मूसा के अन्य विषयों की खोज की है। हम मूसा के मूल अर्थ के शब्दों में सोचेंगे और इसके पश्चात् हम इस विषय के आधुनिक उपयोग के ऊपर विचार करेंगे। आइए मूसा के वास्तविक अर्थ से आरम्भ करें।

मूल अर्थ

सामान्य अर्थ में, परमेश्वर का उसके लोगों के साथ वाचा का सम्बन्ध सदैव आज्ञाकारिता के लिए आशीषों और अनाज्ञाकारिता के लिए श्रापों को सम्मिलित करता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि याकूब ने उसकी अनाज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप नकारात्मक अनुभव को प्राप्त किया। उदाहरण के लिए, अपने भाई और पिता को धोखा देने के पश्चात्, याकूब को अपने जीवन की रक्षा के लिए भागना पड़ा। उसने साथ ही अपने ससुर, लाबान के पास कठिन समय का अनुभव किया।

परन्तु मूसा ने उसके मूल पाठकों को स्मरण दिलाने के लिए स्पष्ट रूप से उन *आशीषों* के ऊपर जोर दिया जिन्हें परमेश्वर ने याकूब को दी थी कि परमेश्वर उन्हें भी बहुत सी आशीषें देगा। याकूब के जीवन के लिए परमेश्वर की आशीषें मोटे रूप में दो समूहों में आती हैं: याकूब की अनाज्ञाकरिता बावजूद भी आशीषें और याकूब की आज्ञाकारिता के जवाब में आशीषें।

एक तरफ तो, याकूब ने उसके निष्ठाहीन होने के बावजूद भी आशीषों को प्राप्त किया। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 27:27-29 में, याकूब ने परमेश्वर की आशीषो को इसहाक के माध्यम से प्राप्त किया यद्यपि उसने इन्हें इसहाक को धोखा देने के द्वारा प्राप्त किया था। याकूब ने परमेश्वर की आशीषों को बेतेल में 28:13-15 में इस सच्चाई के बावजूद भी प्राप्त किया कि वह अपने जीवन की रक्षा के लिए एसाव से दूर भाग रहा था।

दूसरी तरफ, याकूब की कहानी के उत्तरोत्तर खण्डों में, परमेश्वर की आशीषें याकूब के निष्ठावान होने के परिणाम स्वरूप आइ। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 29:1-31:55 में, परमेश्वर ने याकूब के परिवार और धन को लाबान के माध्यम से दिया। जब याकूब ने स्वयं को विनम्र किया, परमेश्वर ने उसके उत्पत्ति 32:1-33:17 में एसाव के माध्यम से आशीषें दी। इसी तरह से, उत्पत्ति 33:18-34:31 में, याकूब ने परमेश्वर की आशीषों को शकेम में जब उसके पुत्र कनानियों के साथ संघर्ष में थे तब प्राप्त किया था। परमेश्वर ने 35:9-13 में बेतेल में याकूब को आशीष दी थी जब कुलपति ने स्वयं को परमेश्वर की आराधना के लिए समर्पित कर दिया था।

मूसा जानता था कि इस्राएली जो प्रतिज्ञात् भूमि की ओर बढ़ रहे थे निर्गमन के समय और भूमि पर विजय प्राप्त करने में बहुत सी चुनौतीयों का सामना करने वाले थे। इसलिए, बहुत से इन और अन्य संदर्भों में, मूसा ने परमेश्वर की आशीषों के ऊपर ध्यान केन्द्रित उसके मूल पाठकों को कृतज्ञता के लिए प्रेरित करने और परमेश्वर की आशीषों को इससे भी ज्यादा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए चलित किया। एक बार जब हम इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीषों के विषय के मूल अर्थ को देखते हैं, तो इन विषयों के आधुनिक उपयोगों की विशेषताओं को आत्मसात् करना कठिन नहीं होता है।

आधुनिक उपयोग

हमारे पहले के विचार विमर्श के विचारों के ऊपर, हम एक बार फिर से मसीह के राज्य के उदघाटन, निरन्तरता और पराकाष्ठा के संदर्भ में बात करेंगे। हमें सबसे पहले अपने ह्रदयों को मसीह की ओर राज्य के उदघाटन के मध्य में लगाना चाहिए। याकूब के विरोधाभास में, यीशु ने निष्ठाहीन होने में किसी तरह की कोई आशीष को प्राप्त नहीं किया; उसने किसी तरह का कोई पाप नहीं किया था। परन्तु क्योंकि वह अपने पिता के प्रति विश्वासयोग्य था, यीशु ने पृथ्वी पर उसके जीवनकाल में महान् आशीषों को प्राप्त किया और यहाँ तक कि महानत्तम आशीषों को जब वह स्वर्ग में स्वर्गारोहित हुआ। यीशु की अपनी आशीषों के बारे में ऐसी क्या उल्लेखनीय बात है, जैसे के इफिसियों 1:3 जैसे संदर्भ शिक्षा देते हैं, मसीह के द्वारा हमारा मेल होने के कारण, *हम* यीशु द्वारा प्राप्त सभी आशीषों में साझा होते हैं।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इसके अतिरिक्त, नया नियम यह शिक्षा देता है कि मसीह उसकी आशीषों को उसके लोगों के ऊपर राज्य की निरन्तरता के पूरे समय उण्डेलता रहता है। जैसा कि उसने याकूब के साथ किया था, परमेश्वर हमें आशीष देता है, कई बार हमारे निष्ठाहीन होने के कारण और अन्य समयों पर हमारी निष्ठा की प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप। अब, मसीह के अनुयायियों के लिए जीवन पूरी तरह से आत्म-त्याग और दुखों से भरा हुआ है। परन्तु 2 कुरिन्थियों 1:21-22 और इफिसियों 1:13-14 जैसे संदर्भ स्पष्ट कर देते हैं कि परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक के ऊपर उसके पवित्र आत्मा की आश्चर्यजनक आशीष की मुहर लगाने की प्रतिज्ञा की है। पवित्र आत्मा आने वाले संसार में यहाँ तक कि हमारे लिए महानत्तम मीरास की गारंटी के लिए हम में वास करता और हमारे साथ रहता है।

इसलिए, जब भी कभी हम परमेश्वर की आशीषों को याकूब के प्रति उत्पत्ति की पुस्तक में देखते हैं, हमें अथाह आशीषों का स्मरण दिलाया जाता है जो कि हम मसीह के राज्य की पराकाष्ठा के समय में प्राप्त करेंगे। मत्ती 25:34 जैसे संदर्भ स्पष्ट शिक्षा देते हैं, कि जब मसीह का पुनरागमन होगा, परमेश्वर हमें "उस राज्य के अधिकारी होने के लिए दे देगा जो कि जगत की उत्पत्ति से पहले हमारे लिए तैयार किया गया है।"

इस्राएल के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह, इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा और इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीषों के विषयों को देख लेने के पश्चात्, हमें अब याकूब के जीवन के प्रति मूसा के द्वारा दिए हुए विवरण के सबसे मुख्य चौथे और स्पष्ट विषय: इस्राएल के *द्वारा* अन्यों को आशीष की ओर मुड़ना चाहिए।

इस्राएल के द्वारा परमेश्वर की आशीष

पहले की तरह ही, हम मूसा के मूल अर्थ के संदर्भ में इस्राएल के *द्वारा* परमेश्वर की आशीष के विषय की खोज करेंगे और इसके पश्चात् आधुनिक उपयोग के विषय की ओर मुड़ेंगे। आइए मूसा के मूल अर्थ को सबसे पहले देखें।

मूल अर्थ

मूल पाठकों के लिए इस विषय की विशेषता को समझने के लिए, हमें इस्राएल की जाति के लिए अब्राहम के पिता होने के विशेष रूप से नियुक्त किए जाने की बुलाहट को स्मरण करने की आवश्यकता है। उत्पत्ति में दी हुई अब्राहम की कहानी विवरण देती है कि परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को नियुक्ति किया के वे मनुष्य के मूल नियुक्तिकरण को पूरा करने के लिए नेतृत्व का कार्य करे। उन्हें गिनती में बढ़ जाना था और परमेश्वर के विश्वासयोग्य स्वरूप में इस पूरी पृथ्वी पर भर जाना था। और ऐसा करने के लिए एक तरीका इस पृथ्वी पर परमेश्वर की आशीषों को अन्य लोगों तक प्रसार करने में था। जैसा कि हम उत्पत्ति 12:2-3 में पढ़ते हैं, कि परमेश्वर ने अब्राहम से ऐसा कहा कि:

> **तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे (उत्पत्ति 12:2-3)।**

यहाँ पर ध्यान दें कि परमेश्वर ने अब्राहम को परमेश्वर के राज्य की आशीषों को "पृथ्वी के सभी लोगों" तक प्रसार करने के लिए बुलाहट दी। परन्तु ध्यान दें कि यद्यपि परमेश्वर की आशीष पूरी पृथ्वी पर प्रसारित हो जाएगी, परन्तु फिर भी प्रत्येक व्यक्ति आशीषित नहीं होगा। परमेश्वर ने कहा कि, "जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा।" दूसरे शब्दों में, कुछ इस्राएल के प्रयासों को अस्वीकार कर देंगे और अन्य उसे स्वीकार कर लेंगे। और परमेश्वर ने इसी के अनुसार लोगों को आशीष और श्राप देने की प्रतिज्ञा दी है।

यह पर्याप्त रूचिकर है, कि आशीष और श्राप के द्विभागी प्रक्रियाएँ जिन्हें परमेश्वर ने अब्राहम को प्रकट की थी याकूब के साथ उत्पत्ति 27:29 में दुहराई गई हैं जब इसहाक ने याकूब को यह कहते हुए आशीषित किया कि:

> **जो तुझे शाप दे वे आप ही शापित हों, और जो तुझे आशीर्वाद दें वे आशीष पाएँ (उत्पत्ति 27:29)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मूसा ने याकूब के जीवन का बहुत सा विवरण इस बात की ओर संकेत करने के लिए लिखा कि कैसे कुलपति ने उसके दिनों में विभिन्न लोगों से व्यवहार किया। यह उन लोगों के पूर्वजों के समूह थे जिन्होंने मूसा के दिनों में इस्राएलियों के साथ व्यवहार किया था। इसलिए, इस तरह से, मूसा ने इस्राएलियों को शिक्षा दी कि कैसे उन्हें इस समूह या उस समूह के साथ व्यवहार करना चाहिए। क्या उन्हें युद्ध करना चाहिए? या क्या उन्हें उनके साथ शान्ति की स्थापना करनी चाहिए?

उदाहरण के लिए, याकूब की कहानियाँ दो लोगों के समूहों के साथ व्यवहार रखे जाने की बात करती हैं जो कि प्रतिज्ञात् भूमि की सीमाओं के भीतर थे।

एक तरफ तो, छठा खण्ड 33:18-35:15 में याकूब और कनानियों के मध्य में मुठभेड़ का विवरण देता है। उत्पत्ति 15:16 में परमेश्वर स्पष्ट कर देता है कि वह इस्राएलियों को तब तक मिस्र से निकाल कर नहीं लाएगा जब तक "एमोरियों का अधर्म" - कनानियों के उपयोग किया हुआ दूसरा नाम – "अपनी पूरी पूर्णता में पूरे" नहीं हो जाते। कुछ विकल्पों को छोड़ कर, जैसे राहाब, कनानियों ने प्रतिज्ञात् भूमि को मूसा के दिनों में इतना ज्यादा अशुद्ध कर दिया था कि परमेश्वर ने इस्राएल को उन्हें नाश कर देने का आदेश दिया। इसलिए यह हमें आश्चर्य में नहीं डालना चाहिए कि मूसा ने याकूब के द्वारा शकेमवासियों की हार और अन्य कनानियों से याकूब को परमेश्वर की सुरक्षा दिए जाने का विवरण दिया है।

दूसरी तरफ, याकूब के जीवन का दूसरा खण्ड उत्पत्ति 26:1-33 में हमें इसहाक और पलिश्तियों की मुठभेड़ का विवरण देता है। याकूब का कनानियों के साथ संघर्ष के विपरीत, यह खण्ड पलिश्तियों के साथ इसहाक की *शान्ति* स्थापना के ऊपर केन्द्रित है। हम यहोशू 13:1-5 में देखते हैं पलिश्ती उस भूमि पर रहते थे जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने इस्राएल से की थी। परन्तु उनका नाम संकेत देता है कि पलिश्ती समुद्रीय लोग थे जो कि कप्तोर से निकल कर आए थे। इसी कारण से, वे तुरन्त कनानियों के विरूद्ध परमेश्वर के न्याय के अधीन नहीं आए। इस नीति को समर्थन उत्पत्ति 21:22-34 और 26:26-33 में इसहाक के दिए हुए उदाहरणों से किया गया है। इन दोनों कुलपतियों ने पलिश्तियों के साथ सन्धियाँ की थी। परिणामस्वरूप, मूसा के दिनों के इस्राएलियों को अब्राहम और इसहाक का अनुकरण पलिश्तियों के साथ शान्ति के साथ बने रहते हुए करना था। यह केवल पलिश्ती ही थे जिनकी उत्तरोत्तर पीढ़ी ने शान्ति को तोड़ दिया था जिसके कारण इस्रालियों ने उनके विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया था।

इन उदाहरणों के आगे, याकूब की कहानी ऐसे लोगों के साथ भी व्यवहार को दर्शाती है जो प्रतिज्ञात् भूमि से बाहर रहते थे। उदाहरण के लिए, लाबान के साथ 29:1-31:55 में केन्द्रीय खण्ड पद्दमराम में रहने वाले इस्राएलियों के दूर के सम्बन्धियों ऊपर ध्यान केन्द्रित करता है, जो कि प्रतिज्ञात् भूमि के उत्तर में रहते थे। याकूब का समय विवरण देता है कि उन्होंने धोखा होने की चेतावनी दी जो कि लाबान और उसके परिवार के चरित्र को दिखाता है। परन्तु उत्पत्ति 32:51-55 संकेत देता है कि याकूब और लाबान ने उनके मध्य की भौगोलिक सीमाओं का सम्मान किए जाने के लिए और एक दूसरे के साथ शान्ति के साथ रहने की शपथ खाई। यह इस बात को स्पष्ट कर देता है कि मूसा का अनुसरण करते हुए इस्राएलियों को उत्तर की सीमाओं पर रहने वाले उनके सम्बन्धियों के साथ शान्ति के साथ रहना था। केवल बहुत बाद में इस्राएल को परमेश्वर के राज्य को इस स्थान में भी प्रसार करना था।

प्रतिज्ञात् भूमि और उत्तरी सीमाओं में रहने वाले लोगों के साथ व्यवहार को दिखाने के अतिरिक्त, याकूब के जीवन की कहानी के एक बहुत बड़ा हिस्सा उसके भाई एसाव के साथ हुए उसके व्यवहार के ऊपर केन्द्रित है। जैसा कि हमने ध्यान दिया है, कि भाइयों और जातियों में संघर्ष का आरम्भ उत्पत्ति 25:19-34 में इस सच्चाई के ऊपर जोर देता है कि याकूब और एसाव का व्यवहार इस्राएल का एदोमियों के साथ किए जाने वाले व्यवहार की प्रतिछाया है जो कि सेईर में, प्रतिज्ञात् भूमि के दक्षिणी छोर की सीमा पर रहते थे।

एदोम उत्पत्ति के मूल पाठकों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने एदोमियों की शत्रुता का सामना किया था जब वे प्रतिज्ञात् भूमि की दक्षिणी सीमाओं की ओर बढ़े थे। परमेश्वर ने इस्राएलियों को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

निर्देश दिया कि वे उस क्षेत्र में रहने वाले अन्य लोगों के विरुद्ध युद्ध करें, परन्तु व्यवस्था विवरण 2:4-6 और गिनती 20:14-21 में, हम पाते हैं कि मूसा ने विशेष रूप से इस्राएलियों को निर्देश दिया था कि वे एदोमियों के साथ विनम्रता और शान्ति के साथ रहें।

याकूब की कहानी ने इस्राएलियों को स्मरण दिलाया कि याकूब ने परमेश्वर की आशीष को धोखा देने के द्वारा प्राप्त किया था। इसने साथ ही इस ओर संकेत दिया कि याकूब ने एसाव के प्रति स्वयं को विनम्र किया। और इससे भी अधिक, याकूब के बारे में कहानियों ने याकूब और एसाव और उनके वंशजों को शान्ति के साथ, भौगोलिक अलगाव के साथ रहने के ऊपर ध्यान केन्द्रित किया। मूसा के विवरण के इन आयामों ने उसके अनुसरण करने वाले इस्राएलियों के साथ सीधे उन तरीकों में बात की जिनमें उन्हें एदोमियों के साथ व्यवहार रखना था। यह केवल बहुत बाद में हुआ, जब एदोमियों ने इस्राएलियों को परेशान किया और इस्राएली उनके साथ युद्ध करने चल पड़े।

अब क्योंकि हमने इस्राएल के द्वारा अन्य लोगों पर परमेश्वर की आशीषों के मूल अर्थ को देख लिया है, हमें इस विषय के आधुनिक उपयोग की ओर मुड़ना चाहिए।

आधुनिक उपयोग

हमारे जीवनों के लिए इस विषय के बहुत से उपयोग हैं, परन्तु सुविधा के लिए हम एक बार फिर से मसीह के राज्य की तीन अवस्थाओं के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे। प्रथम, राज्य के उदघाटन में, यीशु, इस्राएल का राज, पृथ्वी पर रहने वाले सभी लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषों को देने का प्रस्ताव लेकर आया। यूहन्ना 12:47-48 जैसे संदर्भ हमें बातते हैं, कि उसके पहले आगमन में, यीशु शैतान और उसकी शैतानिक शक्तियों को हराने के लिए आया था। परन्तु वह साथ ही पृथ्वी की प्रत्येक जाति के लिए शान्ति के संदर्भ के साथ भी आया था। यीशु और उसके प्रेरितों ने विरोध का सामना किया, परन्तु उन्होंने धैर्य के साथ परमेश्वर के साथ होने वाले मेल मिलाप को सुसमाचार की घोषणा के माध्यम से प्रस्ताव दिया। उन्होंने साथ ही अन्तिम दिन होने वाले परमेश्वर के न्याय को उन लोगों के ऊपर होने की चेतावनी दी जो सुसमाचार को अस्वीकार कर देते हैं।

दूसरा, मसीह के राज्य की निरन्तरता के मध्य में, परमेश्वर की आशीषें निरन्तर कलीसिया की सेवकाई के द्वारा जातियों तक प्रसारित होती है। मसीह और उसके प्रेरितों के उदाहरण का अनुसरण करते हुए, हम दुष्ट आत्माओं के विरुद्ध आगे बढ़ते हैं जो निरन्तर जातियों को धोखा देती हैं। जैसा कि 2 कुरिन्थियों 5:20 जैसे संदर्भ लिखते हैं, हम "मसीह के राजदूत" हैं। हम सम्पूर्ण संसार को परमेश्वर की शान्ति और मेल मिलाप की शर्तों का प्रस्ताव देते हैं, जब हम अन्तिम दिन परमेश्वर के न्याय की चेतावनी देते हैं।

तीसरा, हमें याकूब का अन्यों के साथ किए हुए व्यवहारों को मसीह के राज्य की पराकाष्ठा के दृष्टिकोण के साथ भी लागू करना चाहिए। पुराने नियम के समयों में, इस्राएल की शान्ति का प्रस्ताव अक्सर वापस ले लिया जाता था जब परमेश्वर यह निर्धारित करता था कि न्याय को लाने का समय आ गया है। इसी तरह से, जब मसीह अपनी महिमा में फिर से वापस आएगा, उस सभी जातियों के प्रति शान्ति के प्रस्ताव को पूरी तरह से वापस ले लिया जाएगा जो मसीह और उसके राज्य का विरोध करती हैं। प्रकाशितवाक्य 5:9-10 जैसे संदर्भ हमें बताते हैं, कि उस समय, दुष्ट परमेश्वर के न्याय के अधीन आ जाएंगे, परन्तु पृथ्वी को छोर से असँख्य लोग जिन्होंने मसीह के ऊपर विश्वास किया है परमेश्वर के विश्वव्यापी राज्य में प्रवेश करेंगे।

सारांश

इस अध्याय में, हमने याकूब के जीवन के ऊपर मूसा के प्रस्तुतीकरण की खोज उत्पत्ति की पुस्तक में से की है। हमने देखा कि कैसे उसने अपने विवरण में सरंचना और विषयवस्तु को बड़ी कुशलता के साथ एकीकृत किया है ताकि याकूब का जीवन उन इस्राएलियों के जीवनों को स्पर्श करे जो उसका अनुसरण करते हुए प्रतिज्ञात् भूमि का ओर बढ़ रहे थे। हमने यह भी ध्यान दिया है कि कैसे मूसा ने इस्राएल के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह, इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा, इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीष और इस्राएल के द्वारा परमेश्वर की आशीष के मुख्य विषय, न केवल मूसा के दिनों में इस्राएल की जाति को व्यवहारिक मार्गदर्शन

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

प्रदान करते हैं, अपितु मसीह के अनुयायियों को भी उनके अपने दिनों में परमेश्वर की सेवा करने के लिए के लिए मार्गदर्शन देते हैं।

याकूब की कहानी उन सभी के लिए जो मसीह में विश्वास करते हैं आशा की एक अद्‌भुत कहानी है। इसने पहले मूसा के मूल पाठकों की सहायता की जिन्होंने अपनी स्वयं की कमजोरियों और सफलताओं के साथ निपटारा किया। और इसने अन्य लोगों के साथ व्यवहार के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जब वे प्रतिज्ञात् भूमि की ओर आगे बढ़ रहे थे। यह ऐसा ही कुछ आज मेरे और आपके लिए भी करती है। याकूब के जीवन में, हमें पुन:सुनिश्चित किया गया है कि कोई भी परमेश्वर की दया की पहुँच से परे नहीं है। और उनके जैसे जो मसीह मे सम्मिलित हुए हैं, हमारी कई कमजोरियों के बावजूद, हम याकूब से शिक्षा पाते हैं कि कैसे हमें परमेश्वर की आशीषों को तब तक पूरे संसार में प्रसारित करते रहना है जब तक मसीह अपनी महिमा में पुन: वापस नहीं आ जाता।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम